

रविवार 14 फरवरी, 2021

विषय — आत्मा

स्वर्ण पाठ: नीतिवचन 11 : 17

"कृपालु मनुष्य अपना ही भला करता है।"

उत्तरदायी अध्ययन: भजन संहिता 23 : 1-6

- ¹ यहोवा मेरा चरवाहा है, मुझे कुछ घटी न होगी।
- ² वह मुझे हरी हरी चराइयों में बैठाता है; वह मुझे सुखदाई जल के झरने के पास ले चलता है;
- ³ वह मेरे जी में जी ले आता है। धर्म के मार्गों में वह अपने नाम के निमित्त मेरी अगुवाई करता है।
- ⁴ चाहे मैं घोर अन्धकार से भरी हुई तराई में होकर चलूं, तौभी हानि से न डरूंगा, क्योंकि तू मेरे साथ रहता है; तेरे सोंटे और तेरी लाठी से मुझे शान्ति मिलती है॥
- ⁵ तू मेरे सताने वालों के साम्हने मेरे लिये मेज बिछाता है; तू ने मेरे सिर पर तेल मला है, मेरा कटोरा उमण्ड रहा है।
- ⁶ निश्चय भलाई और करूणा जीवन भर मेरे साथ साथ बनी रहेंगी; और मैं यहोवा के धाम में सर्वदा वास करूंगा॥

पाठ उपदेश

बाइबल

1. भजन संहिता 103 : 1-4

- ¹ हेमेरे मन, यहोवा को धन्य कह; और जो कुछ मुझ में है, वह उसके पवित्र नाम को धन्य कहे!
- ² हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह, और उसके किसी उपकार को न भूलना।
- ³ वही तो तेरे सब अधर्म को क्षमा करता, और तेरे सब रोगों को चंगा करता है,
- ⁴ वही तो तेरे प्राण को नाश होने से बचा लेता है, और तेरे सिर पर करूणा और दया का मुकुट बान्धता है,

2. व्यवस्थाविवरण 1 : 3 (मूसा)

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

³ इस्त्राएलियों की आज्ञा दी थी, उसके अनुसार मूसा उन से ये बातें कहने लगा।

3. व्यवस्थाविवरण 11 : 13-21

- ¹³ और यदि तुम मेरी आज्ञाओं को जो आज मैं तुम्हें सुनाता हूँ ध्यान से सुनकर, अपने सम्पूर्ण मन और सारे प्राण के साथ, अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम रखो और उसकी सेवा करते रहो,
¹⁴ तो मैं तुम्हारे देश में बरसात के आदि और अन्त दोनों समयों की वर्षा को अपने अपने समय पर बरसाऊंगा, जिस से तू अपना अन्न, नया दाखमधु, और टटका तेल संचय कर सकेगा।
¹⁵ और मैं तेरे पशुओं के लिये तेरे मैदान में घास उपजाऊंगा, और तू पेट भर खाएगा और सन्तुष्ट रहेगा।
¹⁶ इसलिये अपने विषय में सावधान रहो, ऐसा न हो कि तुम्हारे मन धोखा खाएँ, और तुम बहककर दूसरे देवताओं की पूजा करने लगे और उन को दण्डवत करने लगे,
¹⁷ और यहोवा का कोप तुम पर भड़के, और वह आकाश की वर्षा बन्द कर दे, और भूमि अपनी उपज न दे, और तुम उस उत्तम देश में से जो यहोवा तुम्हें देता है शीघ्र नष्ट हो जाओ।
¹⁸ इसलिये तुम मेरे ये वचन अपने अपने मन और प्राण में धारण किए रहना, और चिन्हानी के लिये अपने हाथों पर बान्धना, और वे तुम्हारी आंखों के मध्य में टीके का काम दें।
¹⁹ और तुम घर में बैठे, मार्ग पर चलते, लेटते-उठते इनकी चर्चा करके अपने लड़केबालों को सिखाया करना।
²⁰ और इन्हें अपने अपने घर के चौखट के बाजुओं और अपने फाटकों के ऊपर लिखना;
²¹ इसलिये कि जिस देश के विषय में यहोवा ने तेरे पूर्वजों से शपथ खाकर कहा था, कि मैं उसे तुम्हें दूंगा, उस में तुम्हारे और तुम्हारे लड़केबालों की दीर्घायु हो, और जब तक पृथ्वी के ऊपर का आकाश बना रहे तब तक वे भी बने रहें।

4. यशायाह 26 : 8, 9

- ⁸ हे यहोवा, तेरे न्याय के मार्ग में हम लोग तेरी बाट जोहते आए हैं; तेरे नाम के स्मरण की हमारे प्राणों में लालसा बनी रहती है।
⁹ रात के समय मैं जी से तरी लालसा करता हूँ, मेरा सम्पूर्ण मन से यत्न के साथ तुझे ढूँढ़ता है। क्योंकि जब तेरे न्याय के काम पृथ्वी पर प्रगट होते हैं, तब जगत के रहने वाले धर्म की सीखते हैं।

5. 1 इतिहास 22 : 7 (दाऊद)-12, 17-19

- ⁷ दाऊद ने अपने पुत्र सुलैमान से कहा, मेरी मनसा तो थी, कि अपने परमेश्वर यहोवा के नाम का एक भवन बनाऊँ।

- 8 परन्तु यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा, कि तू ने लोह बहुत बहाया और बड़े बड़े युद्ध किए हैं, सो तू मेरे नाम का भवन न बनाने पाएगा, क्योंकि तू ने भूमि पर मेरी दृष्टि में बहुत लोह बहाया है।
- 9 देख, तुझ से एक पुत्र उत्पन्न होगा, जो शान्त पुरुष होगा; और मैं उसको चारों ओर के शत्रुओं से शान्ति दूंगा; उसका नाम तो सुलैमान होगा, और उसके दिनों में मैं इस्राएल को शान्ति और चैन दूंगा।
- 10 वही मेरे नाम का भवन बनाएगा। और वही मेरा पुत्र ठहरेगा और मैं उसका पिता ठहरूंगा, और उसकी राजगद्दी को मैं इस्राएल के ऊपर सदा के लिये स्थिर रखूंगा।
- 11 अब हे मेरे पुत्र, यहोवा तेरे संग रहे, और तू कृतार्थ हो कर उस वचन के अनुसार जो तेरे परमेश्वर यहोवा ने तेरे विषय कहा है, उसका भवन बनाना।
- 12 अब यहोवा तुझे बुद्धि और समझ दे और इस्राएल का अधिकारी ठहरा दे, और तू अपने परमेश्वर यहोवा की व्यवस्था को मानता रहे।
- 17 फिर दाऊद ने इस्राएल के सब हाकिमों को अपने पुत्र सुलैमान की सहायता करने की आज्ञा यह कह कर दी,
- 18 कि क्या तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे संग नहीं है? क्या उसने तुम्हें चारों ओर से विश्राम नहीं दिया? उसने तो देश के निवासियों मेरे वश में कर दिया है; और देश यहोवा और उसकी प्रजा के साम्हने दबा हुआ है।
- 19 अब तन मन से अपने परमेश्वर यहोवा के पास जाया करो, और जी लगा कर यहोवा परमेश्वर का पवित्रस्थान बनाना, कि तुम यहोवा की वाचा का सन्दूक और परमेश्वर के पवित्र पात्र उस भवन में लाओ जो यहोवा के नाम का बनने वाला है।

6. मरकुस 12: 28 (एक) (सं शास्त्रियों), 28 (पूछा) केवल, 28 (कौन सा)-34 (सं 1st .)

- 28 ... शास्त्रियों में से ... से पूछा, सब से मुख्य आज्ञा कौन सी है?
- 29 यीशु ने उसे उत्तर दिया, सब आज्ञाओं में से यह मुख्य है; हे इस्राएल सुन; प्रभु हमारा परमेश्वर एक ही प्रभु है।
- 30 और तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से, और अपनी सारी बुद्धि से, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना।
- 31 और दूसरी यह है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना: इस से बड़ी और कोई आज्ञा नहीं।
- 32 शास्त्री ने उस से कहा; हे गुरु, बहुत ठीक! तू ने सच कहा, कि वह एक ही है, और उसे छोड़ और कोई नहीं।
- 33 और उस से सारे मन और सारी बुद्धि और सारे प्राण और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना और पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना, सारे होमों और बलिदानों से बढ़कर है।
- 34 जब यीशु ने देखा कि उस ने समझ से उत्तर दिया, तो उस से कहा; तू परमेश्वर के राज्य से दूर नहीं॥

7. यशायाह 61 : 10-11

- 10 मैं यहोवा के कारण अति आनन्दित होऊंगा, मेरा प्राण परमेश्वर के कारण मगन रहेगा; क्योंकि उसने मुझे उद्धार के वस्त्र पहिनाए, और धर्म की चदर ऐसे ओढ़ा दी है जैसे दूल्हा फूलों की माला से अपने आप को सजाता और दुल्हिन अपने गहनों से अपना सिंगार करती है।
- 11 क्योंकि जैसे भूमि अपनी उपज को उगाती, और बारी में जो कुछ बोया जाता है उसको वह उपजाती है, वैसे ही प्रभु यहोवा सब जातियों के साम्हने धार्मिकता और धन्यवाद को बढ़ाएगा॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 6 : 14-16

स्वर्ग तक पहुँचने के लिए, हम होने के दिव्य सिद्धांत को समझना चाहिए।

2. 587 : 25-27

स्वर्ग। सद्भाव; आत्मा का शासन; दिव्य सिद्धांत द्वारा सरकार; आध्यात्मिकता; आनंद; आत्मा का वातावरण।

3. 120 : 4-6

आत्मा या आत्मा, ईश्वर, अपरिवर्तनीय और शाश्वत है; और मनुष्य आत्मा, ईश्वर के साथ सह-अस्तित्व रखता है, क्योंकि मनुष्य ईश्वर की छवि है।

4. 477 : 22-29

आत्मा ही मनुष्य का पदार्थ, जीवन और बुद्धिमत्ता है, जो व्यक्तिगत है, लेकिन पदार्थ में नहीं। अंतर मन कभी भी आत्मा से हीन किसी भी चीज को प्रतिबिंबित नहीं कर सकता है।

मनुष्य आत्मा की अभिव्यक्ति है। भारतीयों ने अंतर्निहित वास्तविकता की कुछ झलकियाँ पकड़ीं, जब उन्होंने एक निश्चित सुंदर झील को "द ग्रेट स्पिरिट की मुस्कान" कहा।

5. 390 : 4-11

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

हम इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि जीवन आत्मनिर्भर है और हमें आत्मा के सदा के सामंजस्य से इनकार नहीं करना चाहिए, सिर्फ इसलिए कि, नश्वर इंद्रियों के लिए, प्रतीत होता है कलह। यह ईश्वर की हमारी अज्ञानता है, ईश्वरीय सिद्धांत, जो स्पष्ट कलह उत्पन्न करता है, और उसके सामंजस्य की सही समझ। सत्य हम सभी को आत्मा के सुख के लिए सुखों और दुखों के आदान-प्रदान के लिए मजबूर करेगा।

6. 311 : 7-25

अंतर मन अमर है क्योंकि यह आत्मा है, जिसमें आत्म-विनाश का कोई तत्व नहीं है। क्या मनुष्य आध्यात्मिक रूप से खो गया है? नहीं, वह केवल एक भावना सामग्री खो सकता है। सारा पाप भौतिक का है। यह आध्यात्मिक नहीं हो सकता। पाप यहाँ मौजूद है या उसके बाद केवल तब तक है जब तक कि पदार्थ में मन का भ्रम बना रहता है। यह पाप की भावना है, पापी अंतर मन नहीं है, जो खो गया है। बुराई अच्छे के भाव से नष्ट हो जाती है।

आत्मा के झूठे अनुमानों के माध्यम से भावना और मन में निवास के रूप में सामग्री में विश्वास, अस्थायी नुकसान या आत्मा की अनुपस्थिति, आध्यात्मिक सत्य की भावना में संघर्ष करता है। त्रुटि की यह स्थिति जीवन और पदार्थ में मौजूद पदार्थ के रूप में जीवन का नश्वर सपना है, और होने की अमर वास्तविकता के सीधे विपरीत है। जब तक हम मानते हैं कि आत्मा पाप कर सकती है या वह अमर आत्मा नश्वर शरीर में है, हम विज्ञान के होने को कभी नहीं समझ सकते। जब मानवता इस विज्ञान को समझती है, तो यह मनुष्य के लिए जीवन का नियम बन जाएगा, - यहां तक कि आत्मा का उच्च नियम, जो सद्भाव और अमरता के माध्यम से भौतिक अर्थों पर हावी है।

7. 427 : 2-7

जीवन आत्मा का नियम है, यहां तक कि सत्य की आत्मा का कानून, और आत्मा कभी भी अपने प्रतिनिधि के बिना नहीं है। मनुष्य की आत्मा न तो मर सकती है और न ही बेहोशी में गायब हो सकती है, क्योंकि आत्मा अमर है।

8. 307 : 25 (वह)- 30

दिव्य मन मनुष्य की आत्मा है, और यह मनुष्य को सभी चीजों पर प्रभुत्व प्रदान करता है। मनुष्य को भौतिक आधार से नहीं बनाया गया था, न ही उन भौतिक कानूनों का पालन करने पर प्रतिबंध लगाया गया है जो आत्मा ने कभी नहीं बनाए; उनका प्रांत मन की उच्च विधि में आध्यात्मिक विधियों में है।

9. 302 : 15 (सामंजस्यपूर्ण)- 24

... सामंजस्यपूर्ण और अमर आदमी हमेशा के लिए अस्तित्व में है, और किसी भी जीवन, पदार्थ और बुद्धि के नश्वर भ्रम से परे और हमेशा मौजूद है। यह कथन तथ्य पर आधारित है, काल्पनिक नहीं। मनुष्य के पूर्ण, यहाँ तक कि पिता के रूप में भी पूर्ण होने का विज्ञान बताता है, क्योंकि आध्यात्मिक मनुष्य का आत्मा या मन, ईश्वर है, जो सभी का दिव्य सिद्धांत है, और क्योंकि यह वास्तविक व्यक्ति आत्मा के बजाय आत्मा के नियम द्वारा शासित है, न कि पदार्थ के तथाकथित नियमों द्वारा।

10. 322 : 3-13

जब एक सामग्री से आध्यात्मिक आधार पर जीवन और बुद्धिमत्ता के दृष्टिकोण को बदलते हैं, हम जीवन की वास्तविकता प्राप्त करेंगे, आत्मा का नियंत्रण और हम अपने ईश्वरीय सिद्धांत में ईसाई धर्म या सत्य का अनुभव करेंगे। यह सामंजस्यपूर्ण और अमर आदमी प्राप्त होने से पहले चरमोत्कर्ष होना चाहिए और उसकी क्षमताओं का पता चला। यह अत्यधिक महत्वपूर्ण है - दिव्य विज्ञान की इस मान्यता के आने से पहले पूरा होने वाले अपार कार्य के मद्देनजर - अपने विचारों को दिव्य सिद्धांत की ओर मोड़ने के लिए, कि परिमित विश्वास अपनी त्रुटि को त्यागने के लिए तैयार हो सकता है।

11. 60 : 24-11

एक अशिक्षित कान सद्भाव को एक असहमति कहता है, एकता नहीं। तो, समझदार होने के असली खुशी के बिना भौतिक बोध इसे गलत आधार पर रखता है। विज्ञान कलह को सही करेगा, और हमें जीवन के मधुर सामंजस्य सिखाएगा।

आत्मा के पास आत्मा को प्राप्त करने के लिए अनंत संसाधन हैं, और खुशी अधिक आसानी से प्राप्त की जाएगी और हमारे रखने में अधिक सुरक्षित होगी, अगर आत्मा में मांग की जाए। अकेले उच्च आनंद अमर आदमी के cravings को संतुष्ट कर सकते हैं। हम व्यक्तिगत समझदारी की सीमा के भीतर खुशी का संचार नहीं कर सकते। इंद्रियां वास्तविक आनंद नहीं देती हैं।

मानव के हित में अच्छाई बुराई पर अध्यात्म और पशु पर आधिपत्य होना चाहिए, या सुख कभी नहीं जीता जाएगा। इस खगोलीय स्थिति की प्राप्ति हमारे पूर्वजन्म को कम करेगी, अपराध को कम करेगी, और महत्वाकांक्षा को उच्च लक्ष्य देगी। पाप की हर घाटी को ऊंचा किया जाना चाहिए, और स्वार्थ के हर पहाड़ को नीचे लाया जाना चाहिए, ताकि विज्ञान में हमारे भगवान का राजमार्ग तैयार हो सके।

12. 210 : 11-16

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

यह जानकर कि आत्मा और उसकी विशेषताओं को हमेशा मनुष्य के माध्यम से प्रकट किया गया था, मास्टर ने बीमारों को चंगा किया, अंधे को दृष्टि दी, बधिर को सुना, पैरों को लंगड़ा किया, इस प्रकार दिव्य की वैज्ञानिक कार्रवाई को प्रकाश में लाया मानव मन और शरीर पर मन और आत्मा और मोक्ष की बेहतर समझ देना।

13. 9 : 17-24

क्या आप "अपने भगवान को अपने प्रभु और अपने सभी प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रखते हैं"? इस आदेश में बहुत कुछ शामिल है, यहां तक कि सभी भौतिक संवेदना, स्नेह और पूजा का समर्पण भी। यह ईसाई धर्म का एल डोराडो है। इसमें जीवन का विज्ञान शामिल है, और केवल आत्मा के दिव्य नियंत्रण को मान्यता देता है, जिसमें आत्मा हमारा स्वामी है, और भौतिक अर्थ और मानव का कोई स्थान नहीं होगा।

14. 273 : 18 केवल

आत्मा द्वारा शासित होने पर मनुष्य सामंजस्यपूर्ण होता है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6